वो पंदरा बडे गुनाह की नहुसत और उस्का वबाल

मुफ्ती अहमद खानपूरी द.ब.

बिस्मिल्लाहीर रहमान्नीर रहीम

1. माले गनीमत को अपनी मिल्कीयत न समझे

जब इस्लामी उसूल के मुताबिक जिहाद का सिलसिला जारी हो और दुश्मन के मुकाब्ले मे कामयाबी हो और उसके बाद दुश्मनो का जो माल हासिल हूवा करता है वो माले गनीमत करार दिया जाता है और उसको बैतुल माल मे जमा कर दिया जाता है. चुनान्चे जो माल इजतेमायी तौर पर मुसलमानो की मिलकत हूवा करता है ये भी इसीका हुकम रखता है.

माले गनीमत जब ज़ाती मिलकत की तरह हो जाये यानी ऐसे अमवाल जो लोगो के खर्च के लिये दिये गये है हुकमरान के पास बैतुल माल का खर्चा रखा हूवा है और उसपर वो कंट्रोल किये हुवे है पूरी पब्लिक का माल है लेकिन वो उसको ज़ाती माल के तौर पर इस्तेमाल करना शुरू कर देगा इसी तरह मस्जीदो और मदरसो

के माल और इसी तरह गांव के इजतेमायी कामो के लिये जमा किया हूवा माल जो ज़िम्मेदारो के पास रखा जाता है उन सबका यही हुकम है वो बडी ज़िम्मेदारी की चीझ है और आदमी को इससे बहुत ज़्यादा बचने की ज़रूरत है अपने आपको इससे बहुत ज़्यादा बचाये.

हजरत अबू बकर(रदी) की अमानत का नमूना- किताबो मे लिखा है के ऍक मरतबा उनके घर वालो ने दरख्वास्त की के ये जो हमे वज़ीफा मिलता है उसमे तो बडी मुश्कील के साथ गुज़रान हो जाता है बच्चो की ख्वाहिश है के कोयी मीठी चीझ पका कर खायी जाये तो हजरत अबू बकर(रदी) ने कहा के मेरा तो यही वज़ीफा है और मेरे पास उसकी कोयी गुन्जाईश नही है अगर बच्चो को मीठा खाने का शोक है तो ये जो वज़ीफा मिलता है उसी मेसे कुछ बचत करके तुम उसका इन्तेज़ाम कर सकती हो चुनान्चे उन्होने जब देखा के ये अलग से कोयी रकम नही करेन्गे तो उन्होने बडी मुश्कील से बचत करना शुरू किया और थोडा थोडा करके बचा कर उससे मीठा बना लिया और हजरत अबू

बकर(रदी) के सामने भी पेश किया तो उन्होने पूछा के ये कहा से आया? तो उन्होने बताया के मे इस तरह रोझाना बचाती थी और उसी बचत से ये मीठा पकाया है तो हजरत अबू बकर(रदी) ने फरमाया के मालूम होता है के इस कदर कम रकम से भी हमारा गुज़ारा हो सकता है तो आपने कहा के बैतुल माल से मिलने वाले वज़ीफे से इस कदर रकम कम करदी जाये.

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़(रह) का एँहतेयात- हजरत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़(रह) के मुताल्लीक लिखा है के एँक साहब उनसे मिलने के लिये गये हजरत कुछ हिसाब किताब लिख रहे थे जब हिसाब किताब से फारिग हो गये तो रात का वकत था फिर भी चिराग बुजा दिया और दूसरा चिराग रोशन किया उन साहब ने पूछा आपने ऐसा क्यू किया? फरमाया मे सरकारी हिसाब किताब लिख रहा था और ये चिराग जो जल रहा था उसमे तेल बैतुल माल का था जब वो काम खतम हो गया तो मेने सरकारी चिराग बुजा दिया और अब हम दोस्ताना गुफतेगु करने जा रहे है इसलीये अब

उस चिराग को जलाने की मेरे लिये इजाज़त नही है और ये दूसरा चिराग जो जलाया उसमे मेरा खूद का तैल है.

हमे इससे बहुत ज़्यादा बचने की ज़रूरत है आज कल इसमे बडी बे-ऍहतेयाती होती जा रही है ये सब इसी वइद मे दाखिल हो जायेगा.

2. अमानत को माले गनीमत की तरह न समझो

अमानत का मतलब और मफहूम बहुत आम है एक तो अमानत वो है जिसको हम लोग आम तौर पर अमानत समझते है के आपको किसी ने कोई चीझ रखने के वास्ते दी, उसी तरह से तिजारत के वास्ते किसी को रकम दी जाती है.

आम तौर पर आजकल ऐसा होता है के एक के पास पैसे है और दूसरे के पास पैसे नही है और वो कोई कारोबार करना चाहता है तो पैसे वाला केहता है है भाई मेरा पैसा लो और काम करो नफा मे हम दोनो बराबर के शरीक रहेन्गे कारोबार और तिजारत के तौर पर काम करो.

अब जो आदमी कारोबार कर रहा है उसके पास वो रकम अमानत के तौर पर हूवा करती है लेकिन फिर वो उसके अन्दर खियानत करता है नफा बहुत होता है लेकिन बतलाया नही जाता और उसको हज़म करने की तदबीरे की जाती है.

इसी तरह किसी के पास मस्जीद या मदरसा की रकमे रखी हुई है तो वो उसके पास सिर्फ हिफाज़त के लिये रखी गई है उसमे उसको खर्च करने का हक नही दिया गया उसके बावुजूद उसको माले गनीमत करार दे कर खर्च करने लगता है.

अमानत किया है?- अल्लाह की तरफ से अमानत के बारे मे जो ताकीद की गई है इस सिलसिले मे आयत पेश की है (सूरे निसा ५८) अल्लाह तुमको हुकम करते है के अमानते उनके हक्दार तक पोहचावो. इस आयत के शाने नुजूल के सिलसिले मे मुफस्सीरीन ने लिखा है के फतहे मक्का के मोके पर ये आयत नाजील हुई.

अमानत की वुसुआत- अरबी जुबान के ऍतेबार से अमानत का मफहूम सिर्फ इतना ही नही है बल्के अरबी

जुबान मे अमानत एक वसी तरजुमे के लिये इस्तेमाल किया जाता है और उसमे ये भी आ जाता है वो मफहूम ये है के किसी काम को पूरा करने मे किसी पर एॅतेबार और भरोसा करना उसका नाम अमानत है.

अब भरोसा करने वाले ने जिस काम को पूरा करने मे और जिस ज़िम्मेदारी को पूरा करने मे जिस आदमी पर एॅतेमाद और भरोसा किया है वो उसको पूरे तौर पर बजा लाता है तो यू कहा जायेगा के उसने अमानतदारी से काम लिया गोया एक अमानत उसके हवाले की और वो आदमी उसके एॅतेमाद पर पूरा उतरा और उसपर जो भरोसा किया गया था उसके मुताबिक उसको अन्जाम दिया उसमे ज़र्रा बराबर कमी और सुस्ती नही की तो कहा जायेगा उसने अमानत की अदायगी की.

और अगर उसने उस काम को पूरा करने मे सुस्ती की और उसपर पूरा न उतरा तो उसको खियानत से ताबीर किया जाता है जिसको हम अपनी जुबान मे विश्वास केहते है के अगर सामने वाला उसको पूरा न करे विश्वासघात करे उसको खियानत से ताबीर किया

जाता है और किसी भी काम मे किसी के उपर विश्वास और ऍतेमाद करना उसको अमानत केहते है अरबी जुबान मे अमानत का यही मफहूम है.

दीन पूरा ही अमानत है- इस अमानत से मुराद पूरा दीन है, अल्लाह ने ये दीन इन्सानो के लिये नाजील किया है जो पूरा अमानत है दीन का एक एक हुकम अमानत है उसकी बजावरी इन्सान को करनी चाहिये अगर इसको अदा कर रहा है तो गोया अमानत अदा कर रहा है और अगर अदा नही कर रहा है तो गोया अमानत की अदायगी मे खियानत कर रहा है बल्के उल्माने लिखा है के इन्सान का पूरा जिसम अमानत है अल्लाह ने हमे ये ज़िन्दगी अता फरमायी हमारा वूजूद और शरीर के हर हर अंग जैसे कान, नाक, जुबान, हाथ, पाउ और आंख ये सब अमानत है.

मुलाजमत मे खियानत- ज़िन्दगी के दूसरे शौबे भी है जिनमे अमानत का इतलाक होता है, अगर कोई हम पर ऍतेमाद करे और हम उसके खिलाफ करे तो ये खियानत केहलायेगी मसलन आप किसी के यहा

मुलाजिम और नौकर हो गये, अब दोनो के दरमियान जितने वकत का मुआहदा और एग्रीमेंट हूवा उतना वकत आपने अपने अवकात मेसे तेय कर लिया मसलन रोजाना सुब आठ बजे से लेकर शाम को छे बजे तक के दस घंटे और दरमीयान मे दो घंटे की छुट्टी है तो आठ घंटे आप ने मालिक और शेठ को बेच दिये.

अब शेठ ने आपको काम सोपा के तुम्हे फला काम करना है तो गोया इन आठ घंटो के अब आप मालिक नही है बल्के वो मालिक है जिसके यहा आप मुलाजमत कर रहे है उसका मुआवजा आप को मिलने वाला है अब ये आठ घंटे आप वही इस्तेमाल करेंगे जहा वो मालिक आपको बतला रहा है.

अब अगर कुछ वकत ऐसा है के जिसमे आपका कोई दोस्त आ गया और आप उसके साथ बात कर रहे है या उसमे आप अखबार पढ रहे है या उसमे आप कही दूर दूसरी जगह चले गये तो ये आपने खियानत की इसलीये के ये आठ घंटे आपके नही थे, आप तो तनख्वाह के बदले मे ये आठ घंटे का वकत शेठ और मालिक को दे

चूके हो अब उसने आपको जहा इस्तेमाल करने का पाबन्द किया है उसीमे इस्तेमाल करे अगर उसमे से एक मिनट भी आप ज़ाये करेंगे तो ये खियानत केहलायेगी.

जिसमे अमानत का ज़ज्बा नही उसमे इमान नही-

हुज़ूरﷺ का एक इरशाद मेने नकल किया था जिसमे अमानत का ज़ज्बा न हो उसमे इमान नही ये इमान निकला ही है अमानत से हुज़ूरﷺ से पूछा गया के कयामत कब आयेगी? तो आपﷺ ने जवाब दिया के जब अमानते ज़ाये की जाने लगे तो कयामत का इन्तेज़ार करो.

अल्लाह खियानत से हमारी हिफाज़त फरमाये. और उससे पूरी उम्मत को बचने की तौफीक अता फरमाये. आमीन.

3. ज़कात टैक्स नही इबादत है

तीसरी चीझ है ज़कात जिसको टैक्स समझा जाने लगे यानी आज कल आम तौर पर जो लोग मालदार है और उनपर ज़कात फर्ज़ है उनमे से बहुत से वो है जो ज़कात

की अदायगी का ऍहतेमाम नही करते और उनको ज़कात के लिये माल निकालना ऐसा मुश्कील और तबीयत पर बोज़ गुज़रता है जैसे के टैक्स हो हाला के ढाई फिसद यानी चालीस्वा हिस्सा कोई बडी बात नही है मामूली सी चीझ है आदमी अगर रजा और रगबत के साथ अल्लाह की नजदीकी ढुंढते हूवे इसको अदा करेगा तो बडी बरकत का जरिया बनता है अब लोगो का मिजाज़ ऐसा बनता जा रहा है के फुजूल खर्ची हज़ारो और लाखो की करलेन्गे लेकिन अल्लाह के इस फरीज़ा को अदा करने की तौफीक नही होती उसकी तरफ भी तवज्जुह करने की ज़रूरत है.

जैसे हमारे यहा हुकूमतो ने गरीबी की एक रेखा मुकर्रर की है के गरीबी रेखा के नीचे फला आदमी ज़िन्दगी गुज़ार रहा है ये हुकमत की तरफ से गरीबी रेखा है और एक गरीबी रेखा शरीयतने भी मुकर्रर की है तो ये निसाब जिसके पास है वो शरीयत की निगाह मे मालदारी है और वो मालदारी की रेखा है उससे नीचे वाला गरीब समझा जायेगा तो निसाब के मालिक पर ज़कात वाजिब और वो भी बहुत कम ढाई फीसद यानी

सौ मे ढाई रूपिया है.

आज तो देखेन्गे के मरकज़ी हुकूमत और सूबाइ हुकमत और शहर की जो कारपोरेशन है उनकी तरफ से जो मुकर्रर किया जाता है उसकी मिकदार कई-कई फीसद(%) होती है आदमी की जो कमाई होती है उसमे से ४५, ५०, ६० फीसद तो उसीमे निकल जाता है, लेकिन शरीयते मुतहरा ने ज़कात की जो मिकदार मुकर्रर की है वो इन्तेहाइ कम है फिर हुकूमत की मिकदार भी कैसी है जैसे इनकम टैक्स है के जूं जूं कमाई बडती जायेगी उसके ऍतेबार से उसके फीसद भी बडते जायेन्गे जब के शरीयत कोई फीसद नही बढती आप के पास एक लाख रूपीया है तब भी ढाई परसन्ट है और दस करोड और अरबो रूपिये है तब भी आप पर ढाई परसन्ट है देखीये कितनी आसानी है यानी एक मामूली सी मिकदार और मांगने वाला भी कौन अल्लाह जिसने हमे ये माल दिया.

हमे ज़कात का जो हुकम दिया गया है उसको पूरी खूश दिली के साथ पूरी रग्बत के साथ शोक और ज़ोक के

साथ पूरा करना चाहिये कौन मांग रहा है? जिस वकत ज़कात निकाल रहा हो तो उसका इस्तेहज़ार किया जाये के मे अल्लाह के लिये निकाल रहा हु मे अल्लाह को दे रहा हु.

हदीस मे आता है के जब कोई आदमी अपनी ज़कात का माल किसी गरीब को देता है तो वो माल पेहले अल्लाह के हाथ मे जाता है फिर वो माल गरीब के हाथ मे पोहचता है बहुत से लोग ज़कात की अदायगी के वकत अपना चेहरा बिगाडते है और जिन को दिया जा रहा है उनकी तरफ से नागवारी का इज़हार करते है (नउज़ुबिल्लाह) ये तो बडी खतरनाक चीझ है ये कोई ऍहसान नही है आप तो अल्लाह का हुकम पूरा कर रहे है भाई किसी का हम पर मुतालबा है किसी के हम पर सो रूपिये है उसने हम को कहेलवाया के मेरे तुमसे जो सो रूपिये लेने के है वो फला को दे दो तो किया उसको नागवारी समझेंगे अपने माथे पर कोई शिकन डालेन्गे? नही डालेन्गे वो देखेगा तो किया समझेगा इतना तो ख्याल रखेन्गे.

4. इल्म दुन्या तलब करने के लिये सिखा जायेगा

आजकल देखा जाता है के हमारे मुआशरे मे लोग दुन्या को ही तरजिह देते है और नीयत भी हमारी सही नही इसी तरह इल्म हासिल करते है तो उसमे भी नीयत मे कमी आ जाती है.

तो फिर इस इल्म से लोगो को किया फायदा होगा, जो इल्म नामो नमूद और शोहरत के लिये हासिल किया जाये वो इल्म न उसको फायदा देगा और न लोगो को उससे फायदा पोहचेगा और याद रहे के इल्म के बारे मे कल कयामत के रोज पूछा जायेगा के इल्म हासिल तो किया, लेकिन कया अमल किया?

एक आलिम अल्लाह के दिये हुवे इल्म को फैला रहा है अल्लाह तआला की तरफ से उससे पुछा जायेगा हमने इल्म दिया था तो कया किया? वो कहेगा अल्लाह पढा और पढाया और उसकी खूब तरवीज और इशात की और लोगो को खूब सिखाया दीन के करीब किया दावते दी अल्लाह तआला की तरफ से कहा जायेगा ये इसलीये था के लोग कहे के बडा आलिम और बडा कारी

है. (मिश्कात, मुस्लीम)

तो देख्ये यहा ये कोई दुन्यवी अमल नही है बल्के दीनी अमल है और इस वकत दुन्या मे उचे उचे जो आमाल हो सकते है उनमे से है लेकिन नीयत दुरूस्त नही थी और ज़ज्बा सही नही था इसलीये उस अमल के उपर बजाये उसके के सवाब मिलता और जन्नत का फैसला होता जहन्नम का फैसला कर दिया गया अमल है ज़ाहिरी शकलो सुरत है सब है लेकिन अन्दर का मामला खराब था इसलीये उसको बजाये सवाब मिलने के सजा हुई.

एक तो ये बतलाया है के आदमी गुनाहो की वजह से इल्म से महरूम हो जाता है और दलील पेश की के हजरत इमाम मालिक(रह) की खिदमत मे इमाम शाफे(रह) तलबे इल्म के लिये हाज़ीर हुवे चन्द दिन उनकी खिदमत मे रह कर वापिस जाने लगे तो इमाम मालिक(रह) उनको ताकीद फरमायी के मे देख रहा हु के अल्लाह ने तुम्हारे दिल मे इल्म का एक नूर डाला है गुनाहो के ज़रीये से उस नूर को बुजा मत देना मिटा मत

देना गोया गुनाहो की वजह से आदमी इल्म से महरूम रेहता है रोज़ी से भी महरूम होता है.

अभी मे हुज़ूर ﷺ का इरशाद नकल कर चुका के माशीयत के इरतिकाब की वजह से आदमी रोज़ी से महरूम हो जाता है और गुनाह का इरतिकाब करने की वजह से अल्लाह की जात से उसको वहशत और गभराहट होने लगती है और लोगो से भी वहशत होने लगती है खास कर जो लोग नेक और अहलुल्लाह होते है उनके पास जाने से उसके दिल मे एक खास किसम की वहशत सी पैदा होती है उनकी खिदमत मे हाजरी से आदमी जो बरकते हासिल करता है वो अपने गुनाहो की नहूसत की वजह से उससे भी महरूम रेहता है और उस गुनाह की वजह से उसके दिल मे ज़ुल्मत छा जाती है और उस ज़ुल्मत का असर उसके चेहरे और आंखो पर आता है चुंनाचे गुनेहगार आदमी कितना ही हसीन और जमील कयू न हो उसके चेहरे पर एक सियाही सी मालूम होती है और नेक आदमी कैसा ही सांवला हो लेकिन एक नूर उसके चेहरे पर मालूम होता है.

हजरत अब्दुल्ला बिन उमर(रदी) हजरत अब्दुल्ला बिन मसउद से रिवायत नकल करते है के हुज़ूर صلى الله عليه وسلم ने फरमाया के इन्सान के पाउ कयामत के दिन अल्लाह के सामने से हट नही सकेन्गे जब तक इन पांच चीझो के मुताल्लीक सवाल न किया जाये:-

(1) उमर कहा गुज़ारी कहा खर्च की. (2) जवानी के मुताल्लीक के जवानी की ताकतो को कहा लगाया. (3) माल कहा से और कैसे कमाया और कहा खर्च किया. (4) और माल कहा और कौन्सी जग्हो पर खर्च किया. (5) और जो इल्म सिखा उसपर किया अमल किया.

इल्म भी अल्लाह की अमानत है- इल्म अल्लाह की अमानत है जो ऍहले इल्म है उनको ये बात बाहोशी के साथ सुन लेनी चाहिये के जिसको भी अल्लाह ने इल्म की दौलत अता फरमायी है कल कयामत के रोज अल्लाह के यहा सवाल होगा के कया अमल किया और इस इल्म का कया हक अदा किया? कितना लोगो तक पोहचाया? इल्म अमानत है, जिस रोज आपने इल्म हासिल किया था उस रोज अल्लाह के रसूल صلى الله عليه وسلم की

तरफ से आपको हुकम दे दीया गया था के इस इल्म को फेलावो.

हजरत मुआज(रदी) का बिल्कुल आखरी वकत सकरात का रूह कब्ज़ होने का वकत आया तो बडे ऍहतेमाम के साथ लोगो को जमा फरमाया और फरमाया के एक हदीस हुजूर صلى الله عليه وسلم की है जो आज तक मेने आपके सामने रिवायत नही की आज मे देख रहा हु के मेरा दुन्या से जाने का वकत करीब आ गया है इसलीये ये हदीस बयान कर रहा हु ताके मे अल्लाह के रसूल صلى الله عليه وسلم की सुनायी हुई इस वइद के तहत दाखिल न हो जाउ के जो इल्म किसी के पास है और वो उसने छुपाया तो उसे जहन्नम की आग की लगाम पेहनायी जायेगी उसके बाद उन्होने ये हदीस सुनायी के जिस्का आखरी कलमा लाइलाह इल्लल्लाह वो जन्नत मे दाखिल हो जायेगा.

हदीस मे आता है, हुजूर صلى الله عليه وسلم फरमाते है के अल्लाह ने किसी को मुसलमानो के कामका निगरान बनाया हो और वो इस काममे से किसी कामकी ज़िम्मेदारी किसी ऐसे को हवाले करे के उससे अच्छा इस कामको अन्जाम

देने वाला मौजूद है यानी वो काम आप जिसके हवाले कर रहे है उस काम को इससे अच्छा अन्जाम देने वाला शख्स तुम्हारे अन्दर तुम्हारे मुआशरे मे मौजूद है तो उस आदमीने कौम के साथ खियानत की.

मुतवल्ली-यो के वास्ते मोहतामीम के वास्ते इसमे तम्बीह मौजूद है के आप ऐसे आदमी को कोई किताब देंगे कोई ज़िम्मेदारी हवाले करेंगे के उससे ज़्यादा सलाहीयत वाला आदमी मौजूद है और तुमने इसको किताब इसलीये दी के उसका तुम्हारे साथ ताल्लुक ज़्यादा है तो आपने खियानत से काम लिया है.

5. माँ बाप की नाफरमानी आम हो जायेगी

माँ बाप की नाफरमानी भी अल्लाह के अज़ाब को लाने का सबब है आजकल हमारे मुआशरा मे हम लोग देखते और सुनते है के बाज़ लोग अपने माँ बाप के साथ कैसा कैसा सुलूक करते है कया कया नाफरमानीया करते है और रोजाना इस उनवान पर वकीयात सुनते है के फला ने ये किया और फलाने ने अपने माँ बाप को सताया.

वो माँ बाप जो उसके बचपने मे उसकी हर चीझ को बरदाश्त किया उसकी हर ज़िद को पूरा किया और आज बडा हो के माँ बाप के साथ बुरा सुलूक करता है भला सोचो के अगर हम कोई चीझ मेहनत करके बनाये और फिर उसको कोई तोड दे तो हमे कैसा गुस्सा आता है और हमारे दिल मे कितनी तकलीफ होती है तो ठीक इसी तरह माँ बाप ने भी हमे बडा करने और हमे कुछ बनाने, हमे कुछ सिखाने मे अपना सब कुछ लुता दिया और खूब कुरबानीया दी हमारे लिये के मेरा बेटा बडा हो कर कुछ बने और फिर बेटा उसके बाद उनको गालिया दे उनको सताये नाफरमानी करे तो उनके दिल मे कैसा गुज़रेगा उनका किया हाल होगा वो तो वोही जान सकते जो अपने बच्चो को बडा करते है और माँ-बाप को सताने वाले पर अल्लाह का कहर बरसता है उसकी मुसीबते आती है तो अल्लाह हमे माँ बाप की सही कदर करने की तौफीक अता फरमाये.

उसमे खास तौर पर माँ बाप के हुकूक की तरफ हुजूर ने मुतवज्जे फरमाया वैसे माँ बाप के हुकूक का मामला

बडी ऍहमीयत रखता है कुरान मे अल्लाह ने उसके मुताल्लीक ऐसी ताकीद फरमायी के किसी और चीझ के मुताल्लीक कुरान ने ऐसी ताकीद नही फरमायी.

सुरएँ बनी इसराइल मे अल्लाह का इरशाद है तुम अल्लाह के अलावा किसी और की इबादत न करो और माँ-बाप के साथ भलायी और हुसने सुलूक का मामला करो अल्लामा कुरतुबी(रह) जिन्की तफसीर मशहूर है वो फरमाते है के इस आयते करीमा मे अल्लाह ने अपनी इबादत के साथ माँ बाप के साथ हुसने सुलूक का हुकम दिया है.

इससे मालूम होता है के जहा अल्लाह ने अपनी इबादत का हुकम दिया वही अल्लाह माँ बाप के हुसने सुलूक और भलायी का हुकम किया है इसी तरह सूरएँ लुकमान मे अल्लाह ने अपने शुक्र अदा करने के साथ माँ बाप के शुक्र को जोडा के तुम मेरा शुक्र अदा करो और अपने माँ बाप का भी शुक्र अदा करो देखो इस सूरत की आयत मे अल्लाह ने अपने शुक्र के साथ साथ माँ बाप की शुक्र गुज़ारी को भी ज़रूरी करार दिया ये

उसकी ऍहमीयत बतला रही है के माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक किया जाये.

एक हदीस मे हुजूर ﷺ का इरशाद है के जो फरमाबरदार बेटा अपने माँ बाप की तरफ रहमत की नज़र से देखता है तो उसकी हर एक नज़र के बदले मे अल्लाह मकबूल हज का सवाब उसके नामाये आमाल के अन्दर लिख देते है. ये इरशाद सुन कर सहाबा(रदी) ने अर्ज़ किया के अगर कोई आदमी दिन मे 100 मरतबा इस तरह मोहब्बत की नज़र से देखे तो किया अल्लाह उसको हर नज़र के बदले मे मकबूल हज का सवाब अता फरमायेंगे? तो हुजूर ﷺ ने जवाब मे इरशाद फरमाया जीहां अल्लाह की शान तो बहुत बडी है उसकी ज़ात तो बडी पाकीज़ा है उसके खजाने मे कोई कमी थोडी है इन्सानो के पास जो है वो खतम हो जाता है अल्लाह के खजाने तो ऐसे वसी है जब से कायेनात पैदा की है तब से अपनी मख्लूक की ज़रूरत को पूरा कर रहा है और उसकी बख्शीश का सिलसिला जारी है और उसके खजाने मे कोई कमी नही.

6. बीवी का गुलाम और माँ का नाफरमान

आदमी अपनी बीवी की फरमाबरदारी करे और माँ की नाफरमानी करे बीवी की बात मानता है और माँ की बात नही मानता आजकल माहोल ऐसा ही होता जा रहा है के बीवी की बात सुनी जा रही है और माँ की बात पर कोई ध्यान नही दिया जाता बडे अफसोस की बात है अल्लाह माँ की नाफरमानी से हमारी हिफाज़त फरमाये.

शहर बिन होसब केहते है के एक मरतबा एक बस्ती के पास से मेरा गुज़र हूवा बस्ती के आखिर मे कब्रस्तान था मे वहा पोहचा तो देखा के एक बुडी औरत वहा एक चारपायी पर बेठ कर सूत कात रही है और ये असर और मगरिब के दरमीयान का वकत था अचानक किया देखता हु के एक कबर फटी और उसमे से एक आदमी नवजवान जेसा उसका आधा जिसम तो इन्सान की तरह लेकिन चेहरा गधे की तरह था निकला तीन मरतबा गधे जैसी आवाज़ निकाली फिर दोबारा कबर मे चला गया कबर बन्ध हो गई.

लोगो ने पूछा के आप उस बुडीया को पेहचानते है? मेने कहा के नही पहेचानता कहा के ये जो आपने अभी कबर से जिस जवान को निकलते हूवा देखा ये उसकी माँ है वो शराब पी कर आया करता था तो माँ उसको समझाती थी के बेटा तू ये किया करता है तु अल्लाह की नाफरमानी मत कर शराब मत पी अल्लाह से अपने गुनाहो की तौबा कर ले तो वो जवाब मे ये केहता था के कब तक गधे की तरह बोलती रहेगी, एक दिन असर के बाद उसका इन्तेकाल हूवा तो लोगो ने यहा दफन कर दिया जिस दिन से दफन किया है रोजाना ये मन्ज़र लोग देखते है.

7. दोस्तो पर सखावत और बाप के साथ अदावत

अपने दोस्त के साथ भलायी का मामला करे और अच्छे सुलूक का मामला करे और बाप के साथ बेरग्बती का मामला और बदसुलूकी करे आजकल ये बात देखने मे आ रही है के दोस्तो की दावते हो रही है पार्टी या हो रही है और बाप ज़रूरतमंद और मोहताज़ है लेकिन उसकी तरफ बेटा तवज्जुह नही करता ये बाते आम

होती जा रही है.

केहने का मतलब ये है के आदमी दूसरो के लिये भालायी करता फिरता है दोस्तो के पीछे अपना सब कुछ लगा रहा है लेकिन अपने बाप के लिये कुछ नही करता जिसने पूरी ज़िन्दगी गाडे पशीने की कमाई और मेहनत करके उसके पीछे खपायी और उसको बडा किया अब वो बडा हो के अपने बाप को भुल रहा है ये कितनी बडी ना इन्साफी है और अपने ही बाप से दुश्मनी कर रहा है ये बहुत खतरनाक चीझ है ये अल्लाह को नाराज़ करने वाली बात है इससे हमको बचना चाहिये.

देवबंद मे एक साहब ने एक किस्सा बयान किया हजरत मौलाना अरशद साहब की जुबान से सुना के एक दुकानदारने मुज़ से कहा के फला दुकान पर जो बुढा बेठा है ये दुकान उसके बाप दादा के ज़माने से चली आ रही है एक मरतबा ये शख्स अपनी जवानी के ज़माने मे आया और अपने बाप को हाथ से पकड कर नीचे की तरफ खीच कर नाली के अन्दर डाल दिया उसके बाद

उसकी शादी हुई और औलाद मे उसके यहा सिर्फ चार बेटीया थी कोई बेटा नही था.

उसका ये वाकिया मेरे दिल और दिमाग मे घुमता रेहता था मे सोचने लगा के मेने उल्मा से ये बात सुन रखी है के जो आदमी अपनी माँ या बाप के साथ बुरा सुलूक करता है तो उसकी औलाद उसके साथ वही मामला करती है उसने अपने बाप के साथ ये मामला किया था और उसका कोई लडका तो है नही वो आदमी केहता है एक दिन मेने देखा के उसकी चार लडकीयो मेसे एक लडकी बुरका पेहन कर आयी और उस बुडे दुकानदार को उसी तरह हाथ पकड कर नीचे गिराया जैसे उसने अपने बापको गिराया था और नाली मे डाल दिया.

इसलीये अरबी मे कहावत है जिस्का तर्जुमा है के भाई जैसी करनी वैसी भरनी जैसा दुन्या मे माँ-बाप के साथ करोगे अल्लाह दुन्या मे भी वो मामला उसके साथ करवायेगा जो मामला उसने अपने माँ-बाप के साथ किया अल्लाह पाक पूरी उम्मते मुहम्मदीया की

हिफ़ाज़त फरमाये और माँ-बाप की कदरदानी नसीब फरमाये.

8. मस्जीदो मे दुन्यावी बाते बुलन्द आवाज़ से होने लगेगी

ये बुराई भी आम होती जा रही है लोग नमाजो से फारिग हो कर मस्जीद मे ही बेठ जाते है और बाते करना शुरू कर देते है अगर कोई दीनी ज़रूरी बात है तो ठीक है अपनी दुन्यावी बातो के लिये मस्जीदो मे न बेठे बाहर चले जाये अगर कोई मामला पेश आया हो उस वकत भी मस्जीद ही मे शौर बकोर होने लगता है ये बडी खतरनाक चीझ है आदमी की नैकीयो को बरबाद करने वाली चीझ है, ऐसी हकरतो से हमे बचना चाहिये कयू के मस्जीद अल्लाह का घर है और अल्लाह के घर का ऍहतेराम हर मुसलमान पर ज़रूरी है.

आज कल लोग मोबाइल फोन चालु रख कर आते है और वो नमाज के दरमीयान मे बजने लगता है आज से कुछ ज़माना पेहले अगर कोई आदमी ये केहता के मस्जीद मे म्यूजिक बजेगा तो ये बात लोगो को समझ

मे भी न आती कोई तसव्वूर भी नही कर सकता था के ऐसा भी हो सकता है लेकिन आज हो रहा है लोग मोबाइल फोन चालु रख कर आते है और नमाज के दरमीयान बजने लगता है और पूरी मस्जीद के नमाजीयो की नमाज खराब हो जाती है उनके लिये अल्लाह की तरफ से कितना सख्त मामला हो सकता है उसका अन्दाज़ा नही लगाया जा सकता.

एक साहब ने एक अपाहीज आदमी को देखा जो चलने से माज़ूर था उन्होने पूछा भाई किया बात है? उसने कहा एक मरतबा हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم नमाज अदा फरमा रहे थे मे सामने से गुज़र गया उसपर हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फरमाया हमारी नमाज को काट दिया यानी नमाज की तवज्जुह खतम कर दी अल्लाह उसके नकशे को काटे उस वकत से मे चलने से माज़ूर हो गया. (मुस्नदे अहमद)

हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم ने मस्जीद को अल्लाह का घर करार दिया और जैसा के हदीस मे आता है हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم ने ये भी फरमाया के मस्जीदे तो आखिरत के बाज़ार है जैसे दुन्या के बाज़ार है के लोग वहा जाकर दुन्या हासिल

करते है ठीक इसी तरह आखिरत हासिल करनी हो तो उसको मस्जीद के अन्दर आकर के मस्जीद वाले आमाल करने पड़ेंगे तो वो आखिरत वाला नफा कमायेगा आखिरत की दौलत हासिल करेगा जैसे लोग दुन्या की बाज़ारो से दुन्या हासिल करते है.

फिर आगे फरमाते है के जो शख्स मस्जीद मे दाखिल होता है वो अल्लाह का मेहमान बन जाता है अल्लाह की तरफ से उसकी मेज़बानी मगफिरत की शकल मे की जाती है जैसे कोई शख्स जब किसी के यहा मेहमान होता है तो मेज़बान साहब खाना की मेज़बानी करता है खाना खिलाता है तो यहा अल्लाह उसकी मेज़बानी उसके गुनाह को माफ करके करते है और जैसे जब किसी के यहा जब कोई मेहमान आता है तो आम खाने के साथ कोई खास चीझ भी मेहमान के इकराम मे पकाई जाती है खुसूसी आइटम तो उसके लिये भी अल्लाह की तरफ से खास ऍहतेमाम किया जाता है और उसका ऍजाज़ किया जाता है ये गोया उसके लिये एक तोहफा है गोया यहा आकर आदमी अल्लाह का मेहमान बनता है और

भला कोई शख्स किसी के यहा मेहमान बन कर आये तो किया वो मेज़बान के लिये किसी किसम की तकलीफ पोहचाने का जरिया बन सकता है.

तो मतलब ये है के मस्जीद आखिरत की नेकीया कमाने का एक जरिया है इसलीये कहा गया के मस्जीदे आखिरत के बाज़ारो मेसे एक बाज़ार है.

मस्जीद का एक अदब तो ये है के जब कोई आदमी मस्जीद मे आवे तो अल्लाह के ज़िक्र मे मश्गूल होना चाहिये हुजूर ﷺ फरमाते है के जब तुम लोग जन्नत के बागीचो और जन्नत की कियारी पर से गुज़रो तो चर लिया करो यूही न गुज़र जावो जैसे जानवर की आदत होती है के जब घास चारे वाली जगा से गुज़रता है तो दो एक मरतबा अपना मुंह मार ही लेता है यूही नही जाता इसी तरह जब तुम जन्नत की कियारी के पास से गुज़रो तो यूही न गुज़र जावो बल्के कुछ चर लिया करो तो सहाबा ने पूछा के ऐ अल्लाह के रसूल ये जन्नत के बागीचे और कियारीया किया है? तो हुजूर ﷺ ने फरमाया के मस्जीदे जन्नत की कियारीया है.

फिर सहाबा ने पूछा ऍ अल्लाह के रसूल चरना किया है? तो हुजूरﷺ ने फरमाया **‘सुब्हानल्लाहि वल्हम्दुलिल्लाहि वलाइलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर’** यानी मुख्तलिफ अज़कार के जरिया मस्जीद मे बेठ कर अल्लाह को याद करना ये गोया उसमे चरना है उससे फायदा उठाना है ये भी मस्जीद के आदाब मेसे है आदमी जब मस्जीद मे जाये तो वहा नमाज मे मश्गूल हो कुरान की तिलावत मे मश्गूल हो अल्लाह के ज़िक्र मे मश्गूल हो ये मस्जीद के आदाब मेसे है मस्जीद के हुकूक की अदायगी मेसे है उसका ऍहतेमाम होना चाहिये, मस्जीद की चीझे बाहर न ले जाये और मस्जीद की चीझो का गलत इस्तेमाल न करे इन सब चीझो पर अल्लाह हमे अमल की तौफीक अता फरमाये, और मस्जीदो की सही कदरदानी नसीब फरमाये.

आदमी अपने आपको दुन्यावी बातो मे मश्गूल न करे हुजूरﷺ ने मस्जीद मे दुन्यावी बाते करने से मना फरमाया है हुजूरﷺ फरमाते है के एक वकत आयेगा के मस्जीद के अन्दर लोग बेठ करके दुन्या की बाते करेंगे

ऐसे लोगो के साथ तुम मत बेठो अल्लाह को ऐसे लोगो की कोई ज़रूरत नही है गोया ये मस्जीद के अन्दर दुन्या की बाते करना हुज़ूर ﷺ ने उससे मना फरमाया है.

अल्लामा इबनुल इल्हाम(रह) ने एक रिवायत नकल की है के मस्जीद के अन्दर बाते करना ये नैकीयो को इस तरह खाता है जैसे आग लकडीयो को खाती है और उन्होने लिखा है के जाइज़ और मबाह बाते भी बिला ज़रूरत मस्जीद मे करेगा तो ये मकरूह है और गुनाह का काम है अपने आपको इस तरह मस्जीद मे बातो मे मश्गूल करने से बचाना चाहिये.
अल्लाह हमारी हिफाज़त फरमाये, और ऐसी हरकतो से बचाये.

9. ज़ालिम जाबिर और बदअख्लाक को सलामो इकराम करना

किसी आदमी का इकराम और उसकी इज्ज़त उसकी शरारत और बुराई से बचने के लिये की जाये जैसे एक शरकस आदमी है आप उसको सलाम नही करेंगे तो कुछ न कुछ नुकसान पोहचने का खौफ है ये चीज़ आम

हो गई है शरीफ लोग अपना मुंह छुपा कर अपने घरों मे बेठे हुवे है और बदमाश किसम के लोग खुल्लम खुल्ला गुम रहे है और लोग उन्ही को सलाम कर रहे है इसलीये के ये जान्ते है के अगर उसको सलाम नही करेंगे तो हमारे उपर आफत आयेगी.

एक आदमी है जिसमे कोई खूबी नही है लेकिन लोग उसके बारे मे ये सोचते है के अगर हम उसके साथ इज्ज़त और ऍहतेराम का मामला नही करेंगे तो वो हम को नुकसान पोहचायेगा उसकी तरफ से खतरा है के वो किसी परेशानी मे डाल दे किसी वबाल मे मुब्तेला करदे तो उसकी तरफ से जो ये खतरात लाहिक है उसका मिजाज़ ऐसा है लोग जान्ते है के बडा खतरनाक किसम का आदमी है और अगर उसको हम सलाम नही करेंगे उसकी इज्ज़त हम नही करेंगे उसका अदब और ऍहतेराम नही करेंगे तो पता नही वो हमारे साथ किया मामला कर डाले हमारा जिना दोभर हो जाये हमारे लिये मुश्कीलात पैदा हो जाये तो उसके उन जराइम और हरकतो की वजह से जो अन्देशा है.

अब अच्छे अच्छे लोग जब वो सामने आता है तो उसको सलाम किया जा रहा है वो जान्ता है के उसमे कोई ऐसी बात नही है के जिस्की वजह से उसके साथ ऐसा बेहतरीन इज्ज़त और ऍहतेराम वाला सलाम किया जाये वैसे सलाम तो हर एक को करना है लेकिन इज्ज़त और ऍहतेराम वाला सलाम जो है वो उसका हकदार नही, और इज्ज़त और ऍहतेराम का मामला वो इसलीये कर रहा है के वो जानता है के अगर मे उसके साथ ऐसा मामला नही करूंगा तो पता नही मेरे साथ कैसा बुरा सुलूक करेगा और कैसी मुसीबत मे डाल देगा.

हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم फरमाते है के आदमी का इकराम और इज्ज़त की जाये उसके शर और बुराई के डर से नही, यानी लोग किसी आदमी मे कोई खूबी है कोई कमाल है कोई अच्छी बात पाई जाती है तो उसकी वजह से लोग उसके साथ इज्ज़त और ऍहतेराम का मामला करते है किसी को अल्लाह ने इल्म दे रखा है सलाह और तकवा दे रखा है बुजरूगी से वो मालामाल है और कोई अच्छा वसफ उसके अन्दर मौजूद है तो उसकी उन खूबीयो की वजह

से लोग उसकी इज्ज़त और ऍहतेराम करते है और करना भी चाहिये वो अपने कमालात की वजह से और अपनी उन खूबीयो की वजह से उस बात का हकदार है के उसके साथ इज्ज़त और ऍहतेराम का मामला किया जाये.

10. कमीने को सरदार बनाना

लोगो का सरदार और लीडर कमीना आदमी होगा यानी कौम का कमीना आदमी सरदार और लीडर बनेगा ये चीझ भी आम हो गई है वैसे भी हमारे यहा तो ओ.बी.सी वालो के लिये स्टेजे मख्सूस की जा रही है और वही बढते जा रहे है हम अपनी आंखो से देख रहे है.

आगे हुजूर ﷺ इरशाद फरमाते है के कौम का सरदार और लीडर और उसका बडा एक रजील और कौम का एक दम बदतर आदमी हो ऐसे बदतर आदमी को सरदार बना दिया जाये ये भी एक अलामत मुसीबतो के उतरने की हुजूर ﷺ ने बतलायी है अब देख लिजिये इस ज़माने के अन्दर जो मुनासिब और ओहदे है और इस तरह के जो काम है वो ऐसो के हवाले किये जाते है अब इस तरह के कामो मे ऐसे लोगो का इन्तेखाब धीरे

धीरे अमल मे लाया जा रहा है शरीफ लोग एक तरफ होते जा रहे ताके जब किसी जगा जनरल MEETING होती है लोग जमा होते है और वहा पर किसी को अपना बडा मुन्तखब करने का वकत आता है तो ऐसे मोके पर शरीफ लोग मुंह छुपाते फिरते है इस डर से के अगर हम यहा आगे बडे तो पता नही हमारे साथ कैसा मामला किया जायेगा.

ऐसी सूरत मे जो लोग ऐसे है के लोगो को बोज लगते है वो आगे आ जाते है और इस तरह की ज़िम्मेदारीयो के काम उनके हाथों मे आ जाते है बहुत सी जगा ऐसा होता है मे कोई आम हुकम नही लगा रहा हु बाज़ जगा ऐसा होता है, केहना ये चाहता हु के अब उम्मत के अन्दर ये चीझ बढती जा रही है जाहिर है के हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने जिस चीझ की पेशीन्गोयी फरमायी है वो हो कर ही रहेगी हमे अपने आपको बचाना है हदीस के अन्दर ये जितनी अलामते इस किसम की बयान की जाती है उनके मुताल्लीक उल्मा ने लिखा है के एक तो वो अलामते है जिन से बचना हमारे इख्तियार मे है उनसे

अपने आपको बचाना ज़रूरी है और जो हमारे इख्तियार मे नही है उनसे कोई बहस नही है.

बहरहाल हुज़ूर ﷺ फरमाते है के ज़िम्मेदारी के अहम और बडे काम कौम के कमीने और ज़लील किसम के लोगो के हवाले किये जायेन्गे ये भी गोया एक चीझ है जिसके नतीजे मे उम्मत आज़माइशे मे मुब्तेला होगी.

इस मोके पर मुफस्सीरीन ने लिखा है के ये जो ओहदे और मन्सब और ज़िम्मेदारीया है और लोगो को मुख्तलिफ मन्सब और ज़िम्मेदारीया दी जाती है के हुकूमत का फला काम है और फला औहदा और मन्सब है वो फला के हवाले है ये जितने मन्सब और ओहदे है ये सब अल्लाह की तरफ से अमानत है जिन लोगो को ये इख्तीयारत है के वो ओहदे और काम लोगो के हवाले करे तो वो ऐसे लोगो के हवाले करे जो उसके लायक हो नाहल के हवाले न करे ये ओहदे और जिम्मेदारिय नाहल के हवाले करना भी अमानत मे खियानत है. तो हमे भी जब कोई इन्तेखाब का वकत आये तो सोच समझ के राय और मशवेरा देना चाहिये.

हुजूर ﷺ ने इरशाद फरमाया के जिसके हवाले ओहदे सुपुर्द करने की ज़िम्मेदारी हो और उसने किसी ऐसे आदमी को दिया जो उसका अहल नही है हालाके उसके मुकाबले मे उस काम की अहलीयत और सलाहीयत रखने वाला शख्स मौजूद है तो उस आदमी ने अल्लाह और रसूल और तमाम मोमिनीन के साथ खियानत की इसलीये ये भी ज़रूरी है के ज़िम्मेदारी जिसके हवाले की जाये वो उसका अहल हो उस काम की उसमे सलाहीयत हो उसका ऍहतेमाम करना ज़रूरी है.

11. खुले आम शराब पी जायेगी

हुजूर ﷺ ने इरशाद फरमाया खुले आम शराबे पी जाने लगेगी ये भी एक ऐसा काम है के जब उम्मत उसमे मुब्तेला होगी तो वो आज़माइश का शिकार होगी इब्तेदाएँ इस्लाम मे शराब के उपर पाबन्दी नही थी और अरब लोग शराब के बडे आदी थे बडे शोकीन थे उनके यहा अरबी जुबान मे शराब के लिये बहुत सारे अल्फाज़ है जो शराब के माना को बतलाते और जाहिर करते है बल्के बाज़ तारीख लिखने वालो ने लिखा है के

जब बच्चा पैदा होता था तो उसके मुंह मे सब से पेहले शराब टपकाइ जाती थी और शराब को वो बडा अच्छा समझते थे. उसके बाद जब इस्लाम आया तो शराब पर धीरे धीरे कंट्रोल किया और बतलाया के इस शराब मे फायदे से ज़्यादा नुकसानात बहुत है.

शुरू इस्लाम मे शराब की हुरमत और मुमानत का हुकम नाजील नही हूवा था इस्तेमाल की जाती थी जब हज़राते मुहाजिरीन हिजरत करके मदीना मुनव्वरह गये उस वकत भी शराब का सिलसिला जारी था अलबत्ता हर दौर मे हर ज़माने मे कुछ समझदार लोग होते है जो ऐसी नुकसान देने वाली चीझो के नुकसान को मेहसूस करते है तो शराब के नुकसान को मेहसूस करते हुवे बाज़ हज़राते सहाबा(रदी) जैसे के हजरत उमर(रदी) हजरत मुआज बिन जबल(रदी) और भी बाज़ सहाबा के नाम बताये जाते है वो हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم की खिदमत मे हाज़ीर हुवे और शराब के मुताल्लीक दरयाफत किया.

कुरान मे शराब की हुरमत एक दम से नाजील नही हुई है इस्लाम जो है वो इन्सान के मिजाज़ की और उसकी

तबीयत की बडी रिआयत करता है एक आदमी किसी चीझ का आदी हो किसी चीझ की उसको आदत पड गई हो और आप उसको एक दम से उससे रोक दे तो ये चीझ उसकी सिहत के ऍतेबार से भी नुकसान देने वाली होती है और उसके लिये मुश्कील भी हो जाता है.

चुनांचे शराब की हुरमत की वजह के तीन मरहले इस किताब मे बताये है:

(1) इस्लाम ने शराब को हराम करार देने के मामले मे धीरे धीरे जिसको गुजराती है तब्कावार केहते है वो तरीका इख्तियार किया चुनांचे जब हुजूर ﷺ से शराब के मुताल्लीक उन हज़रात ने पूछा के ऍ अल्लाह के रसूल शराब के बारे मे शरीयत किया केहती है? तो फौरन कुरान मे ये आयत नाजील हुई के ऍ अल्लाह के नबी ये लोग आप से शराब और जुऍ के मुताल्लीक पूछते है तो आप केह दिजिये के उसमे बडे गुनाह के काम भी है और कुछ फायदे भी है लेकिन उसका गुनाह फायदे से बडकर है. (सू. बकरा/19)

तो जो समझदार थे वो समझ गये के कुरान की इस

आयत मे शराब को हराम नही किया गया लेकिन ये बतलाया गया के उसका नुकसान नफा से ज़्यादा है गोया एक मशवरा दिया जा रहा है, चुनांचे इस आयत के नुजूल के बाद बहुत से हज़रात ने शराब पीना छोड दिया कुछ हज़रात ने ये सोचा के शराब मे अगरचे कुछ नुकसान है लेकिन उसमे जो नुकसान है हम उस नुकसान से खूद को बचाने का ऍहतेमाम करते हुवे शराब का इस्तेमाल करेंगे इसलीये के अभी तक उसको मना और नाजाइज़ करार नही दिया है तो उन्होने उस सिलसिला अब भी जारी रखा और बहुत सो-ने अपने तौर पर छोड दिया और मशवेरा को कबूल किया.

(2) उसके बाद एक मरतबा ऐसा हूवा के हजरत अब्दुर्रहमान बिन औफ ने कुछ लोगो की दावत की उसमे शराब रखी हुई थी कयू के वो अभी हराम नही हुई थी सब जान्ते है और देखते भी है के जहा जहा इस शराब को ममनून नही समझा जाता और उसपर पाबन्दी नही होती वहा कोई दावत बगैर शराब के नही होती इसी तरह उस दावत मे भी शराब रखी हुई थी

पीने वालो ने पी रखी थी और मगरिब का वकत आ गया और उसी हाल मे नमाज के लिये खडे हो गये जो इमाम था उन्हो सूरएँ काफिरून की तिलावत की जिस्का तर्जुमा है के ऐं काफिरो तुम जिस्की इबादत करते है मे भी उसी की इबादत करता हु हाला के कुरान मे 'ला अअबुदु मा तअबुदु' के तुम जिन्की इबादत करते हो मे उनकी इबादत नही करता लेकिन "ला" को छोड दिया और नशे मे पता भी नही चला तो उसके फौरन बाद कुरान की एक दूसरी आयत नाजील हुई- ऐं इमान वालो तुम नशे की हालत मे नमाज के करीब मत जावो.

(3) उसके बाद एक मरतबा ऐसा हूवा के हजरत उत्बान बिन मालिक(रदी) ने लोगो की दावत की ये हजरत उत्बान बिन मालिक(रदी) खूद अन्सारी है तो उस दावत मे अन्सार भी थे मुहाजिरीन भी थे अब ये शराब ऐसी खतरनाक चीझ है के आदमी जब उसको पीता है तो पीने के नतीजे मे उसकी अकल और होश और हवास खतम हो जाते है पता ही नही चलता के वो किया कर रहा है किया बोल रहा है ऐसी हरकते करता है के अगर

होश मे आने के बाद उसको बताया जाये तो वो खूद भी शरमीन्दा हो.

जब आदमी शराब के नशे मे मश्त होता है तो उसको पता ही नही चलता के मे किया कर रहा हु, वो होश और हवास गुम किये हुवे थे अरब मे एक पुराना दस्तूर ये भी था के जब मुख्तलिफ कबाइल के लोग जमा होते थे तो हर कबीले वाला अपने कबीले की खूबीया कमालात और उनकी जो चीझे मश्हूर होती थी उनको बयान करता था और दूसरे कबीले की बुराइया करता था.

उस मोके पर हजरत सअद बिन अबी वक्कास(रदी) ने मुहाजिरीन के फज़ाइल और कमालात और अन्सार की तन्कीस और बुराइया बयान करनी शुरू की तो वहा जो अन्सार थे उनको भी गुस्सा आ गया एक नवजवान थे एक ताज़ा उंट ज़बह किया गया था उसके शाने की बाज़ु की हड्डी होती है वो ज़रा चोडी होती है वो लेकर के मारी तो उनका चेहरा ज़ख्मी कर दिया बहुत सी रिवायतो मे ये भी है के बहुत सारे लोग आपस मे घुत्तम घुत्ता हो गये जब होश आया तो देखा के किसी का सर फटा हूवा है

किसी का चेहरा ज़ख्मी है किसी दाढी नोची हुई है तो आपस मे एक दूसरे के लिये दुश्मनी पैदा हो गई.

इसकी शिकायत हुजूर صلى الله عليه وسلم की खिदमत मे की गई तो कुरान की ये आयत नाजील हुई- बेशक शराब और जूवा और ये बुत और सुगुन निकालने के तीर जो उनके यहा हूवा करते थे ये सब गन्दी चीझे है शैतान का काम है तुम उससे बचो शैतान चाहता ही यही है के तुम्हारे दरमीयान शराब और जूवे के जरिया दुश्मनावट और कीना पैदा करे और तुम्हे अल्लाह के ज़िक्र से और नमाज से रोकना चाहता है. (सू. माइदा 90,91)

जिस दिन शराब की मुकम्मल हुरमत आयी तो उसके बारे मे आता है के मदीने मे उस दिन कसरत से शराब बही है जैसे तेज़ बारिश मे सारी नालीया पानी से भर कर बहने लगती है और मुद्दतो तक ऐसा हूवा के बारिश होती थी तो उसके पानी मे शराब का रंग और उसकी बदबू जाहिर होती थी उनके दिलो मे इस्लामी अहकाम पर अमल का ऐसा ज़ज्बा था की सभी हज़रात ने शराब घर से बाहर निकाल कर फेक दी, और बहुत से लोगो

के पास तिजारती शराब भी थी हुजूर ﷺ ने उनसे भी फरमाया के भाई तुम्हारे गोडाउन मे जितनी भी शराब वाला माल है लाकर जमा करावो चुनांचे सब ने लाकर जमा कर दिया.

जब शराब की हुरमत आयी तो उसके बारे बडा सख्त पेहलु इख्तियार किया गया चुनांचे हदीस मे आता है के अल्लाह ने शराब के बारे मे दस लोगो पर लानत और फिटकार फरमायी है:

(1) बनाने वाले पर. (2) बनवाने वाले पर. (3) बेचने वाले पर. (4) उसकी कीमत खाने वाले पर. (5) खरीदने वाले पर. (6) जिसके लिये खरीदा जा रहा उसके उपर. (7) पीने वाले पर. (8) पीलाने वाले पर. (9) उठाकर ले जाने वाले पर. (10) जिसके लिये उठाकर ले जा रहा है उसके उपर.

हुजूर ﷺ का इरशाद है के मे अल्लाह की कसम खाकर के ये बात केहता हु के मुजे जिब्रइल(अल) ने बतलाया के जा आदमी शराब का आदी हो वो ऐसा है जैसे बुत परस्त बुतो की पूजा करने वाला और हुजूर ﷺ फरमाते है के

बुत परस्ती के बाद सब से पेहली चीज़ जिस्से अल्लाह ने मुजे मना फरमाया वो शराब नोशी है और हदीस मे ये भी आता है के हुज़ूर ﷺ ने फरमाया जो शराब का आदी हो वो ऐसा है जैसे बुतो की पूजा करने वाला होता है जैसे लात और उज़्ज़ा जो ज़माना एँ जाहिलीयत के बुत है उनकी पूजा करने वाले जैसा बाज़ रिवायतो मे तो यू भी है के जो शख्स शराब का आदी हो और बगैर तौबा के मरेगा तो अल्लाह के सामने बुत परस्तो की शकल मे पेश किया जायेगा मेदाने हशर मे. तो इससे मालूम हूवा के शराब पीने पर सख्त वइद हुई है.

अल्लाह तमाम उम्मते मुहम्मदीया को इस बुरी आदत से हिफाज़त फरमाये.

12. हलाल और हराम की तमीज़ न रहेंगी

रेशम पेहना जायेगा: लिबास मे हलाल और हराम की तमीज़ न रहे जिन चीझो को पहेनना हराम करार दिया है उसको भी आदमी इस्तेमाल कर रहा है और शराब पी जाये यानी खाने पीने के मामले मे भी हलाल और हराम की तमीज़ न रहे.

आज कल बडे बडे रेस्टोरन्ट बन्ते जा रहे है और लोग धूम से वहा जा रहे है और खा रहे है वहा किया खिलाया जा रहा है वो कोई नही देखता शौक से वहा जा रहे है बस सिर्फ नुमाइश मकसूद है अपने पैसो को हराम तरीका से खर्च कर रहे है अगर हलाल जगा भी खर्च करे तो उसमे भी शरीयत की तरफ से ये जूठ नही है के आदमी नुमाइश के तौर पर उसको खर्च करे लोग यू समझते है के फला रेस्टोरन्ट मे जाकर खायेन्गे तो उससे हमारा एक मकाम बनेगा और वहा हराम खिलाया जा रहा है उसकी कोई तहकीक नही करता.

मरदो का रेशमी लिबास पेहनना भी आज़माइशे की दावत देनेवाला है: रेशम पेहना जायेगा रेशमी लिबास को मरदो के लिये हराम करार दिया गया है सोने चांदी के ज़ेवरात और रेशमी लिबास औरतो के लिये जाइज़ है मरदो के लिये हराम है औरतो के लिये भी सोने चांदी के ज़ेवरात की इजाज़त है सोने चांदी की और चीझे मसलन पीयाला थाली वगैरा उनका इस्तेमाल न मरदो के लिये जाइज़ है और न औरतो के लिये जाइज़

है. तो हुजूर ﷺ फरमाते है के रेशम जो मरदो के लिये हराम करार दिया गया है लोग उसको पहेन्ने लगेन्गे.

बनावती रेशम पहेन सकते है: बुखारी शरीफ की रिवायत मे है के मेरी उम्मत मेसे कुछ लोग ज़िना को और रेशम को और शराब को हलाल समझने लगेन्गे तो उस वकत अल्लाह तआला की तरफ से उनको मस्खकर दिया जायेगा तो बहरहाल रेशम का इस्तेमाल मरदो के लिये हराम है लेकिन अगर वो इस्तेमाल होने लगे तो वो उसी वइद मे दाखिल है आज कल एक बनावती रेशम आता है उसको आरटीफीशल रेशम कहा जाता है वो चूके हकीकी रेशम नही है इसलीये उसकी गुन्ज़ाइश है लेकिन उससे भी बचने का ऍहतेमाम करना बेहतर है. तो इससे पता चला के तकवा वाला लिबास पेहनना चाहिये तकब्बूर और फखराना लिबास से बचना चाहिये. अल्लाह हम सब को अमल की तौफीक अता फरमाये.

13. गाने और गाने बजाने के साधन का इस्तेमाल किया जायेगा

आप ﷺ फरमाते है के गाने वाली औरते और गाने बजाने के साधन को इख्तियार किया जाये यानी लोग आम तौर पर उसको इस्तेमाल करने लगेन्गे.

इस दौर मे गाने के साधन का ज़्यादा इस्तेमाल का मतलब मुफती मुहम्मद तकी उस्मानी(दब) फरमाते है के ये जो रिवायत मे आता है के आम तौर पर इस्तेमाल किया जाने लगे तो पेहले ज़माने मे ये जो मालदार लोग हूवा करते थे वो खास तौर पर गाने वाली औरतो को गाना गाने वाली बन्दीयो को खरीदा करते थे ताके उसके गाने बजाने से अपना दिल बहला सके.

अब जो हदीस मे हुज़ूर ﷺ फरमा रहे है के गाने वाली औरतो और गाने बजाने के साधन को आम तौर पर इख्तियार किया जाने लगे तो उस ज़माने मे हर आदमी के पास ऐसी तो कैसी वुसुअत हो जायेगी के वो गाने बजाने के साधन और औरत इख्तियार करने लगे? तो फरमाते है के उस ज़माने मे गाने बजाने की निस्बत से

रेडियो और टेप रेकॉर्डर है के गाने बजाने ही मे जिस्का इस्तेमाल किया जाता है टीवी है वीसीआर है डिश एन्टीना है ये सारी चीझे आम हो गई है हर घर मे ये चीझे आ गई है और लोग इसीको अपना दिल बहलाने के लिये इस्तेमाल करते रेहते है. ऐसी चीझो से बचना चाहिये. अल्लाह अमल तौफीक अता फरमाये.

इस दौर मे हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم की पेशीन्गोइ की सदाकत:

हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم की पेशीन्गोइ उस ज़माने के हालात के ऍतेबार से देखी जाये तो सब के समझ मे नही आ सकती कयू के हर आदमी के पास उतनी वुसुअत कहा होगी के हर आदमी बन्दी खरीदे और उसको दिल बहलाने के लिये इस्तेमाल करे.

गाने बजाने के साधन बहुत से होते है और वो बहुत से साधन एक साथ इस्तेमाल किये जाये तब ये मकसद हासिल होता है हर आदमी ये साधन कैसे खरीदेगा और ये उमूमी शकल कैसे हासिल होगी? तो फरमाते है के हमारे दौर मे जो ये हालात पैदा हो चूके है और ये सिलसिले शुरू हो चूके है उससे हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم की उस

पेशीन्गोइ की सदाकत का अन्दाज़ा होता है.

ये उस वकत तो किसी की समझ मे नही आ सकता था लेकिन इस वकत हर आदमी समझ रहा है के हर घर मे ये चीझे पोहच चूकी है एक छोटा सा रेडियो है उसके जरिया गाने सुनते है अब तो मोबाइल के अन्दर भी रेडियो होता है और अब तो 24 घंटे गाने फेलाने वाले ऐसे हज़ारो स्टेशन बन चूके है के आदमी 24 घंटे उससे गाना सुन सकता है पेहले तो रेडियो मे इतना उमूम भी नही था अब तो मुस्तकिल बाज़ रेडियो स्टेशन वालो ने इसीको अपना मिशन बना रखा है के 24 घंटे गाने फेलाते रेहते है और सुन्ने वाले सुन्ते भी है.

संगीत के साधन के खरीदार के लिये कुरान मे वइद:

बहरहाल ये गाने बजाने वाली औरते और गाना बजाने के साधन के बारे मे हुजूर صلى الله عليه وسلم ने ये बात फरमायी है और वैसे कुरान और हदीस के अन्दर इस्पर वइदे भी आयी है सूरएँ लुकमान मे अल्लाह का इरशाद है के लोगो मे बाज़ लोग ऐसे है जो खेल की बातो के खरीदार है ताके अपनी जहालत के जरिया लोगो को अल्लाह की याद से

गाफिल करे और अल्लाह की याद को मज़ाक और ठठ्ठा का जरिया बनाये ऐसे लोगो के लिये बडा खतरनाक यानी ज़िल्लत वाला अज़ाब अल्लाह की तरफ से है.

नया जाल पूराना शिकारी: एक आदमी था नज़र बिन हारिस नाम था वो फारिस का सफर किया करता था वहा से वो रूस्तम और इसन्दरयार की किस्से कहानियो की किताबे ले आया और लाकर यहा मक्का वालो से केहता है के मुहम्मद तुमको आद और समूद के किस्से सुनाते है आवो मे तुम को रूस्तम इस्फन्दरयार के किस्से सुनावु वो बन्दी भी खरीद कर लाया था लोगो को अपने घर ले जाता खाना खिलाता और बन्दी से गाने सुनाता और सुनाकर के ऐसा केहता था के देखो इसमे तुम को मज़ा आता है या उसमे गोया ये एक तरह की बुराई बयान करनी थी.

शुरू मे जब कुरान नाजील हूवा तो कुरान के हिदायत नामे से लोगो को गुस्सा करने के लिये और कुरान के जरिया से लोग असर कबूल न करने पाये और कुरान के जरिया से लोग हिदायत कबूल न करे इसलीये उस

ज़माने मे भी मुशरीकीन और काफिरो ने ये तरीका इख्तियार किया था के गाने बजाने के साधन और किस्से कहानिया खरीद कर लोगो को इमान और इस्लाम से हटाने की कोशिश की जाती थी ये सिलसिला उस ज़माने मे शुरू हो चूका था.

चुनांचे आज भी यही नापाक हरकते हो रही है और कयामत तक होती रहेगी मुसलमानो को राहे हक से हटाने के लिये. इस्लाम के अलावा दुन्या के अकसर मज़हब वाले यही मिशन मे लगे हुवे है के केसे मुसलमानो को दुन्या से बेदखल कर दिया जाये, मुसलमानो के दिलो मेसे इमानी हरारत को कैसे खतम किया जाये ताके वो ज़ीन्दा रेह कर भी कुछ काम के न रहे उनका इमान बेकार हो जाये, यही उनका मकसदे ज़िन्दगी है, तो अल्लाह पूरी उम्मत की इन नापाक साज़िशो से बचाये और इमान की कुव्वत नसीब फरमाये और नेक आमाल करने की तौफीक अता फरमाये.

गाना सुन्ने पर सख्त वइदे: एक और रिवायत मे है के हुजूर ﷺ फरमाते है के मेरी उम्मत के अन्दर अल्लाह

लोगो को ज़मीन मे धसां देंगे उनकी शकलो को बदल देंगे और आस्मान से उनके उपर पथ्थर बरसाये जायेन्गे किसी ने हुज़ूर ﷺ के इस इरशाद को सुन कर पूछा ऍ अल्लाह के रसूल ये कब होगा? हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया के जब गाने बजाने वालीयो की ज़ियादती होगी और शराब पीना आम हो जायेगा लोग गाने बजाने वाली औरतो की तरफ मुतवज्जे होन्गे और गाने बजाने के साधन को लोग कसरत से इख्तियार करने लगेन्गे उस चीझ के उपर शकले बदलने की वइद आयी है और हमारी उसकी तरफ कोई तवज्जुह नही.

कयामत से पेहले गाने बजाने वालो का चेहरे का बदल जाना: बहरहाल मे तो ये अर्ज़ कर रहा था के बाज़ हज़राते उल्मा फरमाते है के उस वइद का मतलब ये है के जो लोग उसमे मुब्तेला होन्गे मानवी तौर पर तो उनके दिल मस्ख हो ही जाते है लेकिन कयामत से पेहले ऐसा भी होगा के जब बडी बडी निशानीया जाहिर होन्गी तो ज़ाहिरी तौर पर भी अल्लाह उनके चेहरो को बंदरो और सुव्वरो के चेहरो से मस्ख कर देंगे. आम तौर

पर जो अज़ाब आता है उसके अस्बाब मे गाने बजाने को शराब पीने को और ये गाना बजाने वाली नाचने वाल औरतो को बडा दखल है.

अल्लाह हम को सही समझ अता फरमाये और ऐसे गुनाहो से बचने की बार बार तौफीक अता फरमाये.

14. टीवी और मोबाल इस ज़माने का सब से बडा फितना

पेहले ज़माने मे तो ये होता था के टीवी नही थी तो सिनेमा हाउस जाते थे और हर एक उसकी जुरअत नही करता था जो अच्छे सफेद पोश होते थे उनके लिये सिनेमा मे जाना मुश्कील होता था अब तो एक कोने मे बेठ कर दाढी भी है हाथ मे तस्बीह भी है और देख रहे है शायर केहता है- बहुत मुश्कील है बचना मएँ गलगलों से खलवत मे बहुत आसान है यारों मे मआज़ल्लाह केह देना दोस्तो की मेहफिल मे नउज़ुबिल्लाह नउज़ुबिल्लाह बोल देना तो आसान है लेकिन तन्हाइ मे उस गुनाह से अपने आपको बचाना बडा मुश्कील है.

टीवी ने आकर तकवे का परदा फाश कर दिया: तो हकीकत तो ये है के टीवी ने आकर के आज सब की परहेज़गारी और तकवे का परदाफाश कर के रख दिया है आज शायद ही कोई ऐसा आदमी हो जिसके घर मे टीवी ना हो और वो उससे बचता हो टीवी की एक खासीय्यत ये भी है के आदमी जब कोई गुनाह बार बार करता है तो उस गुनाह की कबाहत उसकी इशात उसकी बुराई उनके दिल और दिमाग से निकल जाती है जिन लोगो के घरों मे टीवी है वो किया केहते है? उसमे किया हो गया? किया हर्ज़ है? मतलब ये के उसमे कोई हर्ज़ नही.

टीवी मे किया हर्ज़ है केहने वाले इमान की खैर मनाये: देखीये दो चीझे अलग अलग है एक तो है गुनाह का करना एक आदमी गुनाह कर इरतेकाब करता है और समझता है के मे गुनाह कर रहा हु तो ठीक है अल्लाह उसको तौबा की तौफीक भी दे दे लेकिन एक आदमी गुनाह का काम ये समझ कर के करता है के ये गुनाह नही है हलाल समझ करता है तो किसी हराम काम को

हलाल समझ कर करना उससे आदमी इमान से निकल जाता है आज टीवी मे किया हर्ज़ है केहने वाले अपने इमान की खैर मनाये.

टीवी मे जो चीझे होती है किया होता है एक तो गाना और गाने की हुरमत कुरान और हदीस से साबित है जैसा के मेने भी आप के सामने पेश किया और फिर उसमे गाने बजाने के साधन इस्तेमाल किये जाते है हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم तो फरमाते है मुजे अल्लाह ने गाने बजाने के साधन को तोडने के लिये भेजा है मेरा भेजना ही इस्के लिये हूवा है और उम्मती को बगैर उसको सुने हुवे सुकून और चैन न पडे ये हाल मोहब्बत का दावा करने जैसा है?

टीवी बेशुमार गुनाहो का मजमुआ है: और फिर ये के उसमे औरतो की मिलावत होती है उसपर जो औरते दिखलाइ जाती है उनकी तरफ मरद शौहवत की निगाह से देखता है हालाके कुरान मे निगाह की हिफाज़त फर्ज़ करार दी गई है हदीस मे है उसके बारे मे बडी ताकीद आयी है उसमे औरते भी मरदो को देखती

है उस टीवी पर मरदो और औरतो का इख्तीलात दिखाया जाता है ये वो गुनाह है जिन का नाजाइज़ और हराम होना कुरान और हदीस के उसूल से साफ साफ साबित है.

इस्के बाद एक आदमी अपनी जुबान से ये केहता है इसमे किया हर्ज़ है आप खूद अन्दाज़ा लगाये के ऐसा जुम्ला बोल करके उसका इमान कैसे महफूज़ रेह सकता है ये टीवी जो है उसने तो हमारी नसलो को खराब कर दिया है एक जर्मन के माहिर का केहना है के ये टीवी तुम्हारे मुआशरे को खतम करे तबाह करे तुम्हारी आने वाली नसलो को बरबाद करे उससे पेहले उसको उठा कर निकाल दो.

अल्लाह हम को सही समझ अता फरमाये और ऐसे गुनाहो से बचने की बार बार तौफीक अता फरमाये.

मोबाइल इस ज़माने का सब से बडा फितना: आज कल सब से बडा फितना मोबाइल और इन्टरनेट है उसको लोग मस्जीद मे भी लाते है चाहिये तो ये था के उसको मस्जीद मे लेकर ही न आते घर छोड कर आते लेकिन

लोग मस्जीद मे भी मोबाइल लाना नही छोडते जहा अल्लाह का जिकर हो कुरान की तिलावत हो वहा पर भी शैतान को लेकर आते है ये बहुत ही खतरनाक फित्ना है कयू के जब आदमी मोबाइल लेकर मस्जीद मे आता है तो नमाजो के दरमीयान जो आवाज़े उसके अन्दर से निकलती है जिसे हम रिंगटोन केहते है.

अल्लाह के बन्दे इसे रखते है आज कल तो अच्छे अच्छे दीनदार लोग ऍहले इल्म हज़रात अच्छे नेक सालेह उनका रिंगटोन बिल्कुल हराम होती है यानी म्यूज़िक की आवाज़ को रखते है उसको हुज़ूर ﷺ ने लानाती आवाज़ करार दिया है हजरत आयशा(रदी) की रिवायत है के हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फरमाया के दो आवाज़े अल्लाह के यहा लानत वाली आवाज़े है एक तो ये गाने बजाने की जो खूशी के मोके पर होता है और दूसरी वो आवाज़ जो गमी के मोके पर किसी की मौत पर मख्सूस अंदाज़ मे मख्सूस आवाज़ निकाल कर रोते थे जिसको नौहा केहते है उन दोनो आवाज़ो को हुज़ूर ﷺ ने लानाती आवाज़ करार दिया है.

मोबाइल की रिंगटोन के बारे मे एँहतियात: ये रिंगटोन की आवाज़ तो म्यूज़िक की आवाज़ है उस म्यूज़िक की आवाज़ के बारे मे तो हजरत अली(रदी) की रिवायत है हुज़ूर ने फरमाया के अल्लाह ने मुजे गाने बजाने के साधन को मिटाने के लिये भेजा है तो अल्लाह करे रसूल जिस चीझ को मिटाने के लिये आये थे उसके बारे मे आज ये हो रहा है के अच्छे खासे दीनदार किसम के लोग भी ऐसे है के उनको ये सुने बगैर चैन पडता नही है.

अब रिंगटोन भी जो है वो मुस्तकिल इन कंपनीयो का एक कारोबार बन गया उनके फोन आते रेहते है फलाने गाने के तरज़ पर ये रिंगटोन है ये फलाने गाने की है और लोग पैसे दे दे कर उस रिंगटोन को अपने मोबाइल मे दाखिल कर रहे है ये कितनी खतरनाक बात है.

मोबाइल भी जब इस्तेमाल करना है तो इस्तेमाल करने वाले के लिये ज़रूरी था के मोबाइल के मुताल्लीक सारी तफसीलात उल्मा से मालूम करे और पूछे के मे किन शरतो के साथ मोबाइल का इस्तेमाल कर सकता हु और जो शरतें बताई गई उन शरतों का लिहाज़ करके

उसका इस्तेमाल करना चाहिये आज जो भी चीज़ मार्केट मे आयी खरीदी और इस्तेमाल करना शुरू कर दिया उसकी कोई परवाह ही नही के अल्लाह के रसूलﷺ की इस सिलसिले मे किया हिदायते है.

शरीयत उस चीज़ के इस्तेमाल की हमे इजाज़त देती भी है या नही? और अगर देती है तो किन शरतों के साथ किन कायदे के साथ? उन बातो का हम ने ऍहतेमाम नही किया तो उसका नतीजा हमारे सामने है के मस्जीदो के अन्दर म्यूज़िक बजने लगा पुराने ज़माने मे कोई तसव्वूर भी नही कर सकता था.

अल्लाह हम को सही समझ अता फरमाये और ऐसे गुनाहो से बचने की बार बार तौफीक अता फरमाये.

15. अपने अस्लाफ को बुरा भला कहेन्गे

ये हदीस का आखरी जुज़ है जिस पर आज तफसील बयान की जाती है के इस उम्मत के बाद मे आने वाले लोग अगले लोगो को बुरा भला केहने लगेन्गे लानत और मलामत करने लगेन्गे उनकी शान मे गुस्ताखीया करेंगे उनको गाली गलूच करेंगे ये पंदरहवी अलामत है

जो हुजूर صلى الله عليه وسلم ने बतलायी है फरमाते है जब ये सारी चीझे होने लगेन्गी तो इन्तेज़ार करो उस वकत सुर्ख आंधीयो का गोया आग बरसेगी ऐसे वकीयात जाहिर होन्गे या लोग ज़मीन मे धसां दिये जायेन्गे या लोगो के चेहरे और उनकी शकले बिगाड दी जायेगी ये अज़ाब गोया जगाह जगाह उमूमी अंदाज़ मे पेश आयेगा.

अस्लाफ की बुराई करना भी अज़ाब को दावत देने वाला है: इस उम्मत के बाद मे आने लोग अगले लोगो को बुरा भला केहने लगेन्गे लानत मलामत करेंगे उनकी शान मे गुस्ताखीया करेंगे उनको गाली गलुच करेंगे ये सिलसिला बहुत पेहले से शुरू हो चूका है शीया और रवाफिज़ के यहा हज़राते सहाबा(रदी) को मुस्तकिल ताना तशनी और गाली गलुच का निशाना बनाया जाता है बल्के उनके अकाइद की बुनीयाद ही उसपर है मे उनके कुछ अकाइद मुख्तसर अंदाज़ मे उनकी किताबो से पेश करता हु कयू के तफसील का वकत नही है.

हज़राते सहाबा के बारे मे शीयाओ की ज़हनीयत:

शीया अपने अकाइद अपनी किताबो मे बयान करते है उसमे ये है के हम चार बुतो से अपनी पाकीज़गी जाहिर करते है ये चार बुत से कौन मुराद है? नउज़ुबिल्लाह (1 हजरत अबू बकर रदी), (2 हजरत उमर रदी), (3 हजरत उस्मान रदी), (4 हजरत मुआविया रदी), और चार औरतो से अपनी बरात जाहिर करते है: नउज़ुबिल्लाह, (1 हजरत आयशा रदी), (2 हजरत हफसा रदी), (3 हजरत हिन्दा रदी), (4 हजरत उम्मे अरकम रदी) और वो तमाम जो उनके मानने वाले है ये उनका अकीदा है के रूएँ ज़मीन पर ये बदतरीन मख्लूक है सारी मख्लूक मे बदतरीन है नउज़ुबिल्लाह कुफ्र को नकल करना कुफ्र नही होता ये कितना खतरनाक कित्ना घटीया अकीदा है दूसरे अकाइद तो बहुत गन्धे है ये तो सिर्फ सहाबा से मुताल्लीक है सब नही आप के सामने उनके दो चार अकाइद ही पेश कर रहा हु वो केहते है के जब तक आदमी उन चारो बुतो से अपनी बराअत का इज़हार नही करेगा उस वकत तक उसका इमान मोअतबर नही होगा.
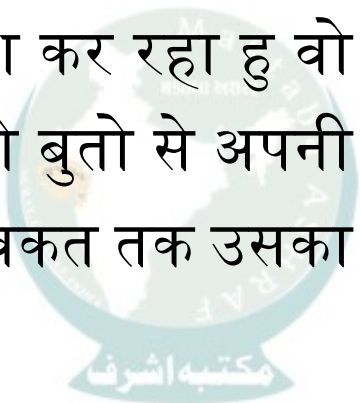
शीयो ने अल्लाह को भी नही बख्शा: अल्लाह के बारे मे भी उनके बुरे अकाइद है वो केहते है के अल्लाह ने वही तो हजरत अली(रदी) पर भेजी थी हजरत जिब्रइल(अल) हुजूर ﷺ के पास गलती से लाते रहे नउज़ुबिल्लाह 23 साल तक अल्लाह को पता नही चला के मे जहा जिब्रइल के जरिया वही भेज रहा हु वो जिब्रइल तो हजरत अली(रदी) के बजाये हुजूर ﷺ को पोहचा रहे है अल्लाह के मुताल्लीक हुजूर ﷺ और हजरत जिब्रइल(अल) के मुताल्लीक उनका ये अकीदा कितना खतरनाक है.

जिब्रइल(अल) की अमानत और बेमिसाल कुव्वत: बल्के हजरत जिब्रइल(अल) की अमानत और ताकत को (सू. तकवीर 19, 21) मे ये केह कर बयान किया गया के ये कुरान एक ऐसे फरिश्ते के जरिया से पोहचाया जा रहा है जो बडा शरीफ बडा बाइज्ज़त है बडा कुव्वत वाला है.

हजरत जिब्रइल(अल) की कुव्वत का ये आलम के कौमे लूत की बस्तीयो को जब अल्लाह ने हलाक करना चाहा तो पूरी बस्तीयो को एक पर उपर उठा करके आस्मान की तरफ ले गये आसमान वालो ने उस बस्ती के जानवरो

की आवाज़े सुनी और फिर उनको उलट दिया हजरत जिब्राइल(अल) के ऐसे 600 पर है रिवायतो मे आता है के हजरत जिब्राइल(अल) अगर अपने दो पर फेला दे तो सारी दुन्या को ढांप दे ये हाल है उनकी कुव्वत का अर्श वाले के यहा बडे बाइज्ज़त है बा-रोब मकाम और मंज़ीलत वाले है और आसमान वालो मे फरिशतो मे उनकी बात मानी जाती है इतात की जाती है और अमानतदार है अब उनके उपर ये लोग इल्ज़ाम लगा रहे है.

मेरे सहाबा को बुरा भला मत कहो: हुजूर ﷺ का इरशाद है के जब तुम उन लोगो को देखो जो मेरे सहाबा को बुरा भला केहते है तो कहो के अल्लाह की लानत हो तुम्हारे शर के उपर ऐसे लोगो के मुंह पर उनके सामने कहो हुजूर ﷺ फरमाते है के मेरे सहाबा को बुरा भला मत कहो तुम मेसे एक आदमी अगर उहद पहाड के बराबर सोना खर्च करे तो वो मेरे सहाबी के एक मुठ या आधे मुठ खर्च करने के भी बराबर नही हो सकता.

अन्दाज़ा लगाये सहाबा ने जो दो रकाते हुजूर ﷺ की इकतेदा मे पढली सारी उम्मत की नमाजे उन दो रकातो

का मुकाबला नही कर सकती सहाबा ने जो सदका और खैरात आप ﷺ की खिदमत मे पेश किया और हुज़ूर ﷺ ने उसको कबूल कर लिया तो सारी उम्मत का सदका और खैरात उसका मुकाबला नही कर सकता.

अस्लाफ के बारे मे शम्सुद्दीन सल्फी का खराब ज़हन: उन सहाबा को ये लोग निशाने तनकीद बनाते है और आज ऐसे और भी लोग पैदा होते जा रहे है जो अस्लाफ को सहाबा को और उनके अलावा अकाबिर को बुज़ुर्गो को बुरा भला केहते है आज एक जमात खूद को सलफी केहती है और वो ऐसी ऐसी गुस्ताखीया अस्लाफ की शान मे करते है एक किताब शाये हुई है जिसमे वो लिखते है शम्सुद्दीन सलफी जिसको मदीना university से p.h.d. का certificate दिया गया उसने अपनी किताब मे ऐसी ऐसी खतरनाक बाते लिखी है के हम और आप उसका तसव्वूर भी नही कर सकते.

चार मज़ाहिब यानी ये जो चार इमाम है और उनको मानने वाले चाहे वो हन्फी हो या शाफी हो मालिकी हो हन्बली हो उन सब के बारे मे वो केहता है के ये सब कबर

परस्त है बल्के उनके मुताल्लीक लिखा है के बदतरीन कबर परस्त और मुल्हदीन है और इमाम गजाली(रह) के मुताल्लीक वो लिखता है? के गजाली कबर परस्तो जहमीयो सुफीयो का अकेला हुज्जतुल इस्लाम है, मौलाना जलालुद्दीन रूमी(रह) जिन्की मसनवी है जो गोया फन्ने तसव्वूफ की बुनीयाद है उनके बारे मे किया लिखता है? सुफीया का इमाम हन्फी सुफी जहदतुल वुजुद का काइल और खुराफात बकने वाला ये हजरत मौलाना जलालुद्दीन रूमी(रह) के बारे मे केहता है.

हजरत ख्वाज़ा मुइनुद्दीन चीश्ती अजमेरी(रह) के मुताल्लीक लिखता है के वो सुफीया का इमाम है और उसकी कबर की लोग हिन्दुस्तान मे पूजा करते है और शैख महयुद्दीन इबनुल अरबी(रह) जो बहुत बडे आलिम गुज़रे है उनके मुताल्लीक तो लिखा है नउज़ुबिल्लाह के वो ज़िनदिक और बेदीन बल्के एक जगा लिखा है शैखुल कुफ्र यानी काफिरो का शेख, नउज़ुबिल्लाह.

ये वो पंदरा काम है जो ये उम्मत करेगी जिसकी अल्लाह के रसूल ﷺ ने सख्त वइदे सुनायी है और

बतलाया के ये कामो के करने पर अल्लाह की गैरत हरकत मे आती है यानी के अल्लाह का कहर बरसता है, जिसके नतीजे मे दुन्या पर मुसीबते और आफते आती है.

अन्दाज़ा लगाये ये चीझे हमारे अकाइद को कहा पोहचा रही है आज का मुसलमान इन सब बातो का खयाल ही नही करता और गोया अपने हाथो अपने पैरो पर कुल्हाडी मारता है.

ज़रूरत है के ऐसी चीझो से बचा जाये.

अल्लाह मेरी और आपकी इन सारे फितनो से हिफाज़त फरमाये.

(तिरमिज़ी, मिश्कात)

हवाला- महमुदुल मवाइज़ उर्दु से रिवायत का खुलासा लिप्यान्तर किया गया है.